आध्यात्मिकता भारत की ताकत है : मोदी

पीएम ने वाईएसएस के शताब्दी वर्ष समारोह के दौरान विशेष डाक टिकट जारी किया

एजेंसी. नई दिल्ली

भारत की ताकत के तौर पर आध्यात्मिकता की तारीफ करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को अफसोस जताया कि कुछ लोग इसे धर्म से जोड़ते हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि आध्यात्मिकता और धर्म काफी अलग-अलग चीजें हैं। योगोदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इंडिया (वाईएसएस) के जन्मशती समारोह की स्मृति में यहां आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा कि योग आध्यात्मिकता की यात्रा में पहला कदम है। प्रधानमंत्री ने कहा कि दुनिया भारत की आबादी, जीडीपी या रोजगार की दर के आधार पर इसकी तुलना करती है, लेकिन उसने न तो आध्यात्मिकता के लिए इसे जाना है और न ही इसे मान्यता दी है । उन्होंने कहा कि भारत की

आध्यात्मिकता इसकी ताकत है। लेकिन दुर्भाग्य की बात यह है कि कुछ लोग आध्यात्मिकता को धर्म से जोड़ देते हैं। लेकिन आध्यात्मिकता और धर्म बहुत अलग-अलग हैं। प्रधानमंत्री ने योगी परमहंस की भी तारीफ की। योगी परमहंस ने अपने संदेश के प्रसार के लिए भारत छोड़ दिया था, लेकिन वह हमेशा देश से जुड़े रहे। मोदी ने कहा कि एक सेकंड के लिए भी योगी अपनी मातृभूमि से दूर नहीं रहे। उन्होंने कहा कि योगी

- प्रधानमंत्री मोदी ने योगी परमहंस की प्रशंसा की

अपने आखिरी शब्दों में भी मातृभूमि को याद करते रहे। मोदी ने याद दिलाया कि काशी में योगी को अब भी याद किया जाता है और 'मां गंगा की तरह पवित्र'' उनकी शिक्षाएं उस पवित्र शहर में कई लोगों के दिल में प्रवाहित होती हैं, जहां उन्होंने अपना बचपन बिताया। मोदी ने यह बातें ऐसे समय में कही हैं, जब धर्म के आधार पर समाज को ध्रुवीकृत करने को लेकर राजनीतिक पार्टियों की ओर से की जा रही कोशिशों पर बहस छिड़ी है। परमहंस योगानंद ने 1917 में योगोदा सत्संग सोसाइटी की स्थापना की थी। इस कार्यक्रम में मोदी ने योगोदा सत्संग सोसाइटी पर एक विशेष डाक टिकट भी जारी किया।

मेडिकल शिक्षा में पीजी की 4000 सीटें जोड़ी

सूरत। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि सरकार ने चिकित्सा शिक्षा क्षेत्र को दुरुस्त किया है और मेडिकल कॉलेजों में चार हजार नई परास्नातक सीटें जोड़ी हैं, जिससे चिकित्सकों की कमी की समस्या का समाधान होगा। मोदी ने सूरत हवाईअड्डे पर उपस्थित लोगों से कहा कि हमारे देश में स्वास्थ्य के क्षेत्र में हमेशा शिकायत रही है कि हमारे पास पर्याप्त चिकित्सक नहीं हैं। यह चिकित्सक बनाने की व्यवस्था दुरुस्त नहीं होने के कारण है। उन्होंने कहा कि अगर हम समस्या की जड़ में जाएं तो सीटों की कमी के कारण परास्नातक पाठ्यक्रमों (चिकित्सा क्षेत्र) में कम संख्या में छात्रों को नामांकन मिल पाता है, इसलिए कुछ ही प्रोफेसर बन पाते हैं।